रजि सं0 1396

स्थापना वर्ष 2002.03

सांस्कृतिक उत्सव

''लोक संस्कृति के आईने में बनारस''

प्रायोजक :- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज

सहयोग :- संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

28 फरवरी तथा 01 मार्च 2025

कार्यक्रम स्थल

चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा (चित्रकूट कान्वेंट स्कूल के पास)

वी. एल. प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक

डॉ. संगीता श्रीवास्तव
सचिव

आयोजक :- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था- वाराणसी

Email : r.sankrityayan2002@gmail.com

Website : www.mahapanditsseak.org

महापंडित राहुल सांकृत्यायन
शोध एवं अध्ययन केन्द्र (संस्था)

Reg. No. 1396/ 2002-03
PAN No. AAAAM9270F
NITI AYOG- UP/2016/0094561
12A Reg. No. AAAAM9270FE20138
80G Reg. No. AAAAM9270FF20219
CSR No. CSR00019209
0542-2440513 (Off.)
9451938931
8005094909

पत्रांक.....

दिनांक.....

भाव-संवेदना

विशिष्ट अतिथि – श्री राजेश गौतम निदेशक, दूरदर्शन व आकाशवाणी ने कहा बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं संगीत की परंपरा है इस लोक संगीत और लोक नाटक विशेष रामलीला का एक बहुत समृद्ध भंडार है। संगीत समारोह मेलों, त्योहारों, अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है काशी।

श्री राजेश गौतम
निदेशक
दूरदर्शन व आकाशवाणी

12-3-25

कार्यक्रम विवरण
"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

प्रायोजक– उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज
सहयोग– संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आयोजक– महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, संस्था वाराणसी
कार्यक्रम स्थल– चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट,सारंग चौराहा, वाराणसी

संक्षिप्त कार्यक्रम विवरण

आयोजक – महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, संस्था वाराणसी में सांस्कृतिक उत्सव के तहत परिचर्चा, नाटक, गायन, वादन तथा नृत्य एकल व सामूहिक का आयोजन 28 फरवरी तथा 1मार्च को 2025 को चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा में संपन्न हुआ।

सांस्कृतिक उत्सव के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में लोक संस्कृति के आईने में बनारस विषयक परिचर्चा में अध्यक्ष पद से काशी के वरिष्ठ साहित्यकार व पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी डॉ सुरेन्द्र प्रताप ने कहा कि विश्व स्तर पर बनारस का महत्व इसके विभिन्न स्वरूप पौराणिक धार्मिक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थित गंगा जी के किनारे इसकी अनूठी छटा इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

विशिष्ट अतिथि – श्री राजेश गौतम निदेशक, दूरदर्शन व आकाशवाणी ने कहा बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं संगीत की परंपरा है इस लाक संगीत और लोक

नाटक विशेष रामलीला का एक बहुत समृद्ध भंडार है। संगीत समारोह मेलों , त्योहारों अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है काशी अपना वक्तव्य देते हुए पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी डॉ श्रद्धानंद ने कहा कि बनारस साहित्य , कला , नृत्य और संगीत से बढ़कर आध्यात्मिकता और कलात्मक विरासत का प्रतीक है। स्कूलों, अकादमियों और सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से पोषित यहां की कला , अतीत और वर्तमान को जोड़ती है और वाराणसी की विरासत को शास्त्र संरक्षित करती है।लोक और शात्र का अन्वय और समन्वय ही काशी को विशिष्ट बनाता है । यह रसेश्वर शिव की नगरी है,इसीलिए यहाँ समस्त कलाएँ भिन्न–भिन्न रूप–रंग में विद्यमान है।सत्यं शिवं सुन्दरम् की जीवन्तता ही आनंदकानन को पूर्णता प्रदान करती है।यहाँ की लोक –संस्कृति में अभेदत्व की भावना साकार होती ,इसीलिए पूरी दुनिया को आकर्षित करती है क्योंकि यह जितना मूर्त है उससे अधिक अमूर्त है ।प्रत्येक विषय क्षेत्र के साधकों की यह पुण्य भूमि है ,सभी इसकी अनंतता को अपनी दृष्टि से भासित करते हैं ।सात वार नौ त्यौहार वाली नगरी बनारस उत्सव की नगरी है जो सदैव लोकमंगल की भावना को जागृत करती है ।

मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कथाकार डॉ मुक्ता ने कहा लोक संस्कृति के आईने से देखा जाय तो बनारस अपनी विपुलता, सघनता, समरसता और गंगा जमुनी सामंजस्यता के कारण पूरे विश्व के आकर्षण का केंद्र रहा है।आचार्य शुक्लअपने साहित्य में लोकमंगल को महत्व देते हैं। यहाँ की गली मोहल्ले में हर प्रदेश की संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसका आधार लोकमंगल है। बनारस की

लोकगायकी ,ठुमरी, टप्पा, कजरी ने पूरे देश में शास्त्रीय गायन के समकक्ष जगह बनाई है।साहित्य, संगीत, कला का उद्गम स्थल रहा है काशी। अनूठे लक्खी मेलों का शहर है बनारस। वरिष्ठ नवगीतकार सुरेन्द्र बाजपेयी ने कहा जब लोक मंगल की परम्पराएँ रीति रिवाज के साथ जारी रहती हैं तो लोक–संस्कृति समृद्ध होती है। बनारस इस बात का साक्षात् प्रमाण है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो ए के सिंह पूर्व निदेशक,भारत कला भवन एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, कला इतिहास विभाग बी एच यू वाराणसी ने कहा बनारस के लोग सहज सरल और आत्मीय उर्जा से भरे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और जीवंतता से जीते हुए उसका आनंद लेते थे, पर आज उनकी सरलता, आत्मीयता और सहजता विलुप्त सी हो गई है । हम पहले बनारस आते थे तो बनारस छोड़कर जाने का मन नहीं करता था परंतु अब ऐसा नहीं लगता है। यहां की जीवंतता को विलुप्त होने से बचाने की आवश्यकता है।

अपने वक्तव्य में विशिष्ट अतिथि के रुप पूर्व विभागाध्यक्ष ललित कला विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, प्रो मंजुला चतुर्वेदी ने कहा कि लोक संस्कृति के आईने में जब हम बनारस को देखते हैं तो हम इसे बहुत समृद्ध पाते हैं चाहे वह कला की दृष्टि हो, चाहे संगीत की अथवा लोक साहित्य की लोक संस्कृति सर्वत्र अपने समृद्ध स्वरूप में विराजमान रही है जिसने जीवन को जीने के मूल मंत्र दिए हैं किंतु वर्तमान समय में अपसंस्कृति के प्रभाव से लोक जीवन के प्रभाव छिन्न–भिन्न हुए हैं जिनको पुनर्जीवित करना अथवा उनका संरक्षण करना हमारे जीवन की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार और कवयित्री डॉ मञ्जरी पाण्डेय ने लोक–संस्कृति के आइने में बनारस को देखने के लिये बौद्ध धर्म को भी देखना, समझना,पड़ेगा। घरोहरों से लेकर बौद्ध रीति परंपराओं में उपयोग में आने वाले खास रेशमी परिधानों, खाता ,पात्र आदि लखौरी ईंटों से लेकर बनारस के कला कौशल,रेशम,धातुएं और काष्ठकलाओं जिनका उपयोग आज भी पारंपरिक तरीके से हो रहा है जो आज भी अपसंस्कृति के प्रभाव से बचा है। दीनदयाल उपाध्याय राजकीय

महिला महाविद्यालय, सेवापुरी की प्राचार्या डॉ सुधा पांडेय ने कहा बनारस अपने संगीत गायन एवं वाद्य यंत्रों संबंधी दोनों प्रकार की विधाआं के लिए प्रसिद्ध है तथा इसकी अपनी नृत्य परंपराएं हैं इसके अतिरिक्त इसमें लोक संगीत और लोक नाटक की समृद्ध परंपरा जुड़ी है।

इसी अवसर पर डॉ गीता रानी शर्मा ने कहा बनारस घराना तबला वादन की कला में पूरे देश में मशहूर है किशन महाराज समता महाराज जैसे उस्ताद इसी शहर से ही आते हैं बिरजू और लच्छू महाराज अपनी नृत्य कला के लिए ख्यातिलब्ध हैं। शहनाई वादक बिस्मिल्ला खां साहब इसी शहर के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शहनाई वादक थे। ख्यातिलब्ध राम भक्त डॉ काशीनाथ श्रीवास्तव रामलीला और रासलीला के लिए जाने जाते थे।

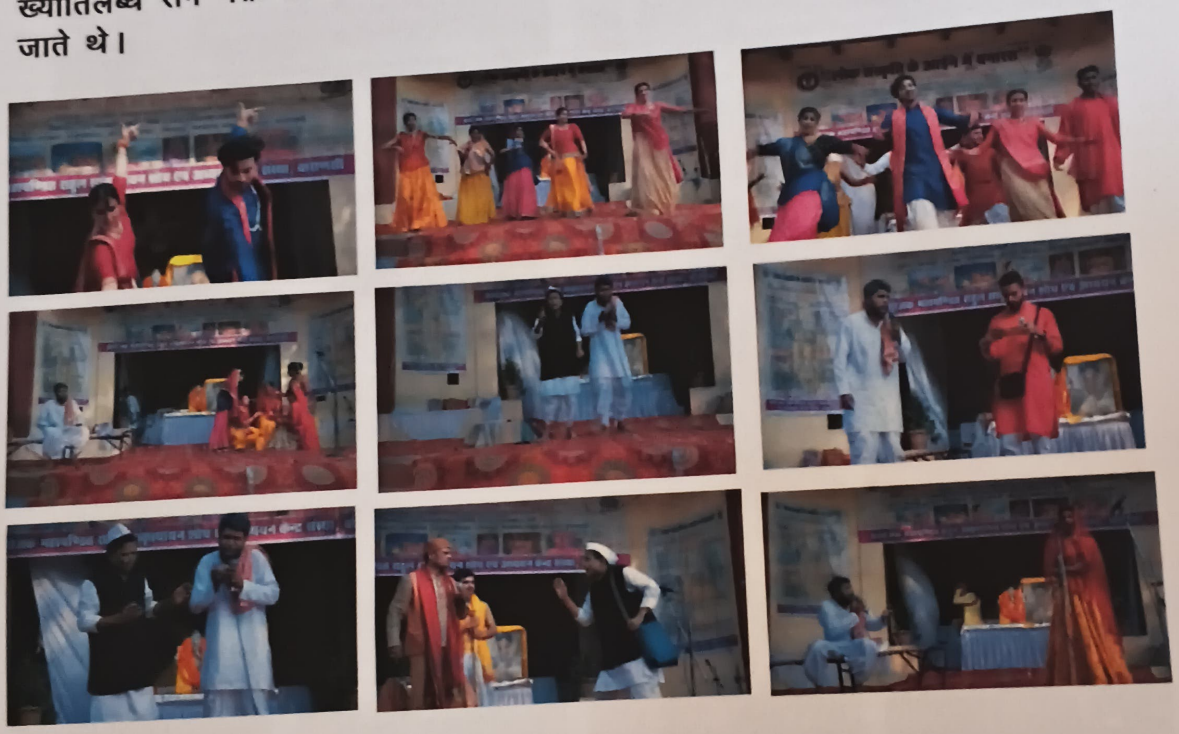

अपने वक्तव्य में काशी की वरिष्ठ साहित्यकार और कवयित्री प्रो रचना शर्मा ने कहा कि आदि देव शिव की नगरी काशी एक विलक्षण नगरी है शिव लोक के देवता हैं इसलिए काशी भी लोक संस्कृति में रंगा हुआ सात वार नौ त्योहार का शहर है। जहाँ शिव के द्वारा पार्वती का गाना करा कर लाने का भी लोकोत्सव मनाया जाता है।

संस्था सचिव व वरिष्ठ साहित्यकार और कवयित्री डॉ संगीता श्रीवास्तव ने कहा शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ वाराणसी जीवंत लोक नृत्य के लिए भी प्रसिद्ध है । ऊर्जावान रासलीला राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम को उत्साह के साथ दर्शातो है । रंग बिरंगे सजे धजे नर्तक भावपूर्ण हरकतों और जीवंत पैरों के माध्यम से भगवान कृष्ण की कहानियों को जीवंत करते हैं। सुंदरता और जटिल पैरों के काम के लिए मशहूर

कत्थक, कहानी कहने की क्षमता लय और माधुर्य के मिश्रण से मंत्र मुक्त कर देता है। इस अवसर पर काशी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ शुचिता पांडेय,डॉ शुभा श्रीवास्तव, राजीव गौड़, डॉ गीता रानी शर्मा, अरविंद कुमार, संगीता तिवारी, सुनीता चौबे, कीर्ति प्रकाश पाण्डेय, डॉ शरद श्रीवास्तव, डॉ आनंद श्रीवास्तव मासूम, डॉ संतोष कुमार प्रीत, संदीप चतुर्वेदी,अमिता वर्मा, प्रीती श्रोवास्तव, प्रीती द्विवेदी, संचिता पांडेय, डॉ सुमन पाठक, सुषमा श्रीवास्तव,सुरभी श्रीवास्तव तथा तमाम ग्रामीण बाल वृद्ध,साधु संत,और रंगकर्मी उपस्थित रहे।

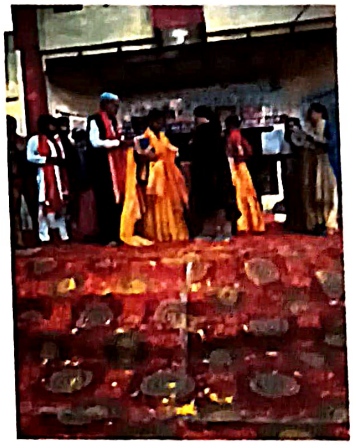

द्वितीय सत्र के सांस्कृतिक उत्सव में गायन , नृत्य व वादन में योगेश कुमार गायक, प्रशांत साहनी तबला वादक , लोक गायिका सरोज वर्मा, हारमोनियम नागेंद्र शर्मा, सुभाष कनौजिया नाल वादन, अनूप मिश्रा गायन , लोक–नृत्य समृद्धि श्रीवास्तव, नगर निगम के ब्रांड एंबेसडर अमित श्रीवास्तव ने जटायु की सद्गति नामक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति की। इस लोकोत्सव में क्षेत्र की महिलाओं ने भी

लोकगीत व लोक नृत्य का झूम झूम कर आनंद लिया ।

द्वितीय दिवस 1 मार्च 2025 मुख्य अतिथि प्रो मंजुला चतुर्वेदी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ श्रद्धानंद रहे। स्मृति चिन्ह और अंग वस्त्र से उनका स्वागत सचिव ने किया।

सांस्कृतिक उत्सव के अंतर्गत नाट्य मंचन तथा समूह नृत्य प्रस्तुत किया गया। जिसमें कहानी सम्राट मुंशी प्रेमचंद के नाटक बेटी का धन की नाट्य प्रस्तुति हुई । नाट्य रूपांतरण प्रो अरूण जैन तथा निदेशक डॉ शुभ्रा वर्मा ने किया।

शुभ्रा वर्मा के निर्देशन में ही शान ए बनारस नृत्य , रैलिया बैरन और होली नृत्य की प्रस्तुति हुई।

सभी 50–55 कलाकारों को अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और सर्टिफिकेट मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रो रचना शर्मा, स्वागत संस्था सचिव डॉ संगीता श्रीवास्तव तथा संयोजन श्री बी एल प्रजापति व कृष्ण मुरारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कीर्ति प्रकाश पाण्डेय ने किया।

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

उद्घाटन-सत्र 'दीप-प्रज्ज्वलन'

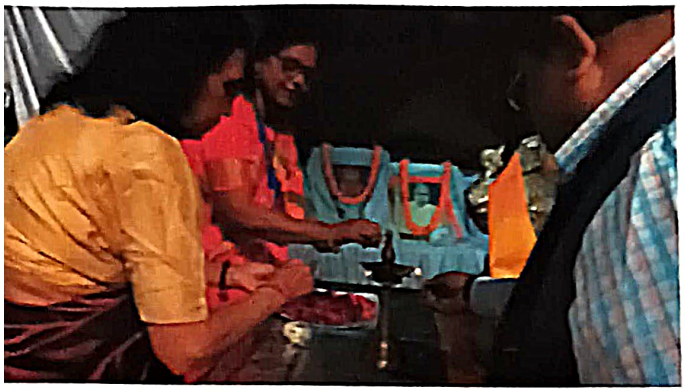
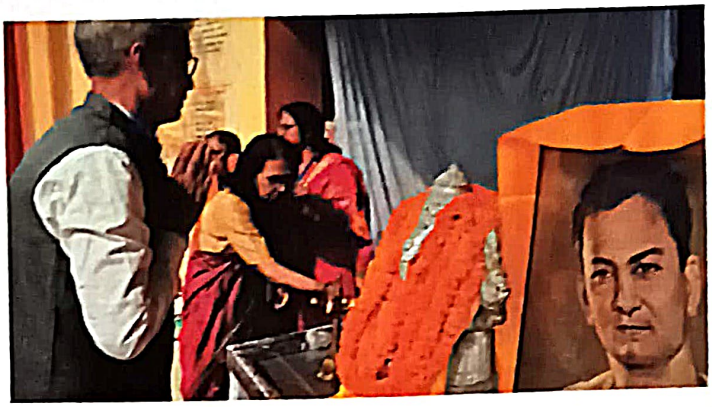

प्रथम-सत्र 'परिचर्चा'

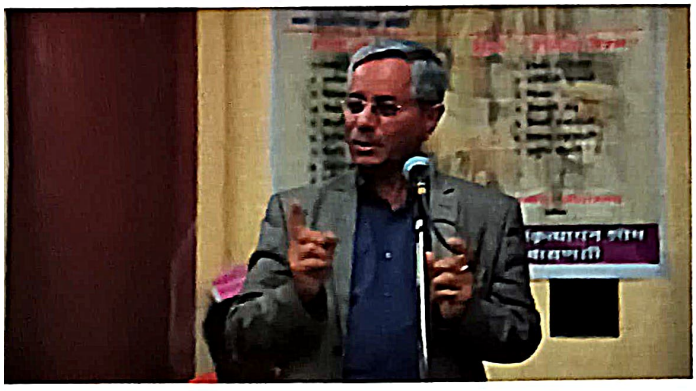

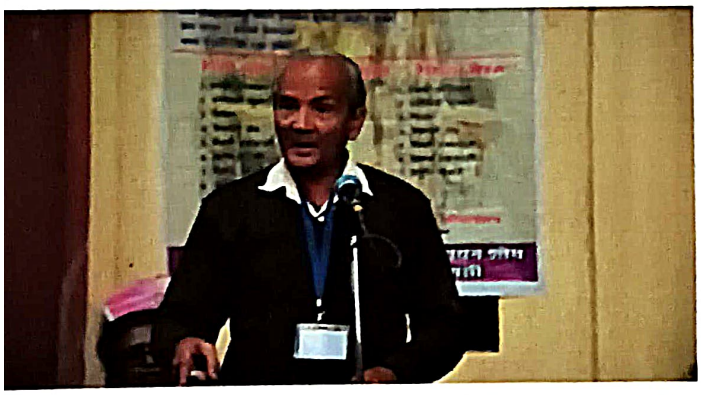

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

'परिचर्चा'

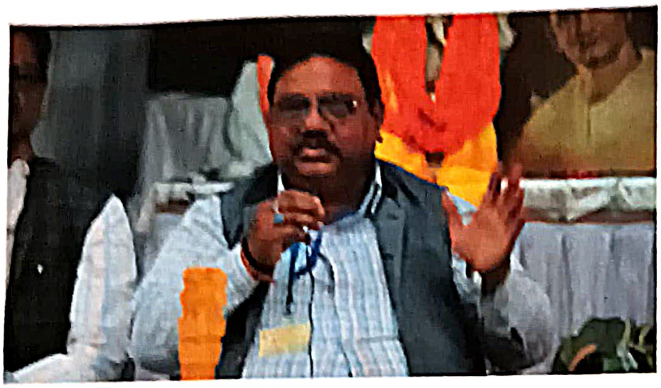

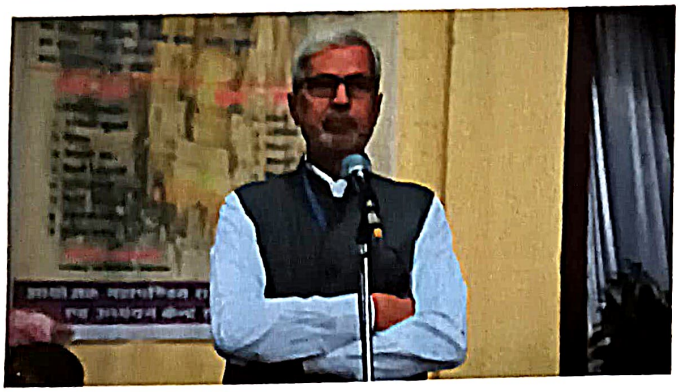
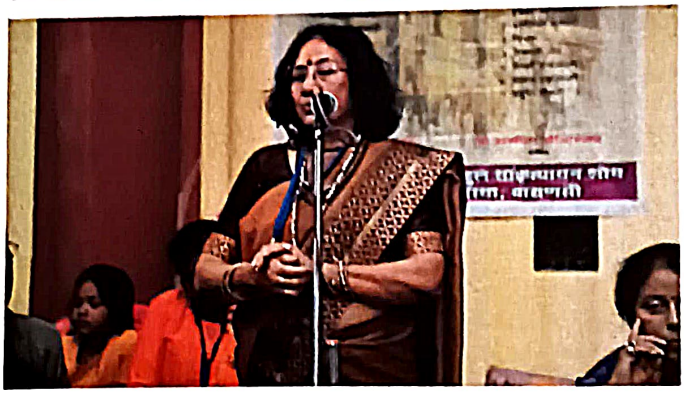

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

द्वितीय-दिवस 'सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रम'

शान-ए-बनारस

नाटक- बेटी का धन

लेखक - मुंशी प्रेमचंद्र, निर्देशक - डा. शुभ्रा वर्मा, नाट्य रुपांतरण - प्रो. अरुण जैन

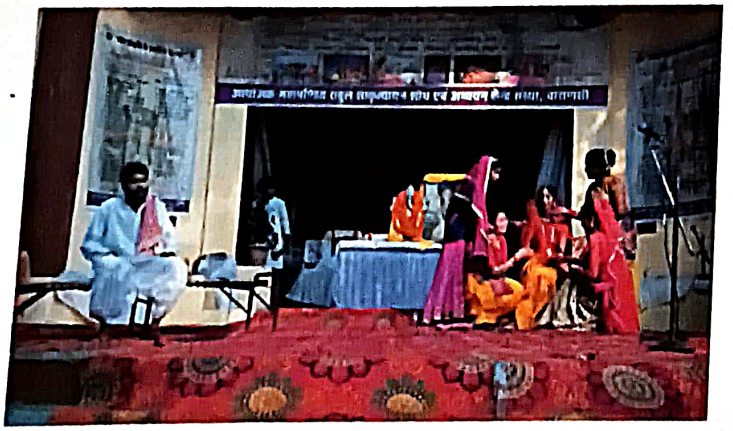

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

द्वितीय-दिवस 'सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रम'

शैलिया-बैरण नृत्य

होली-नृत्य

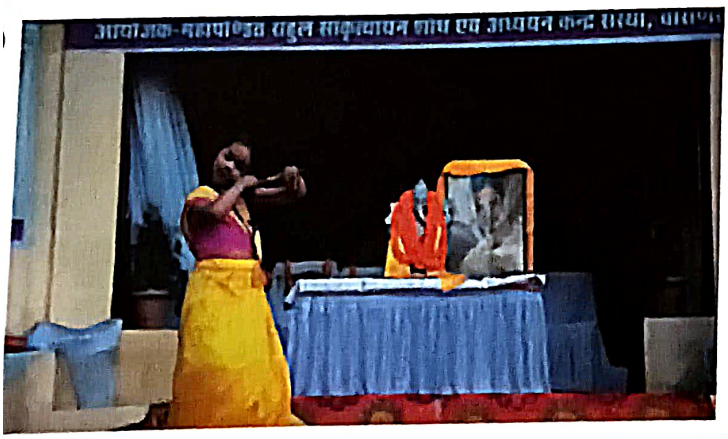

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

पुरस्कार वितरण

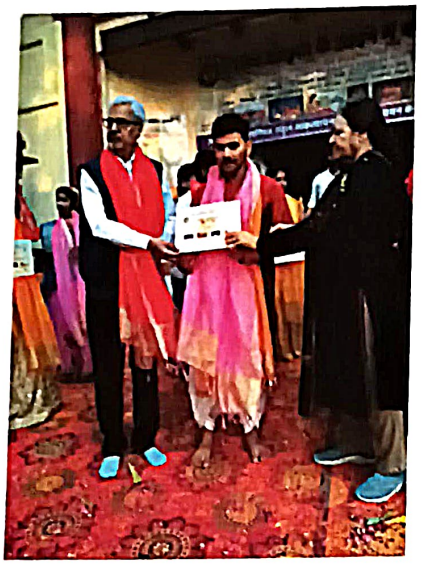

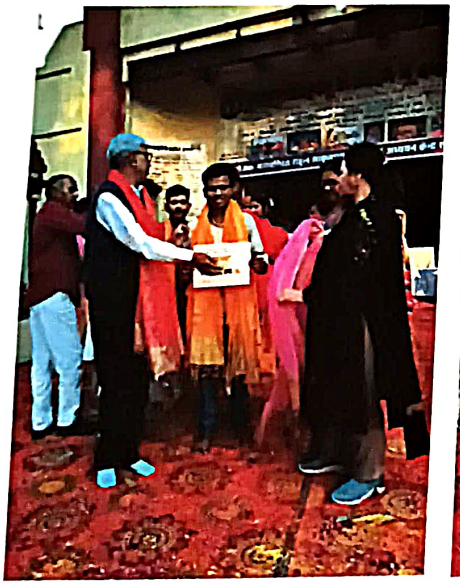

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

पुरस्कार वितरण

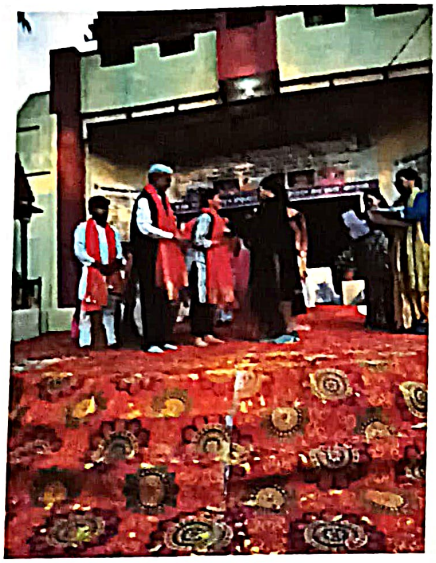
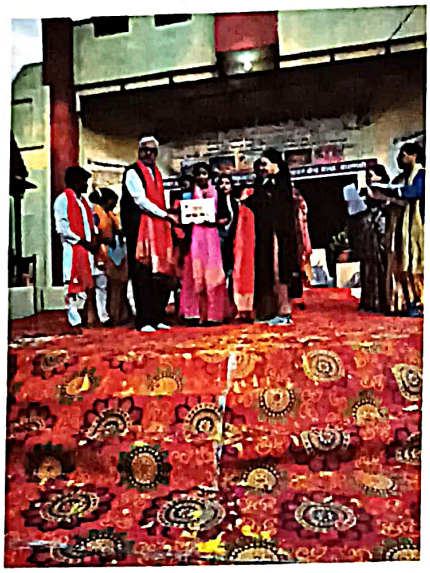

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

सांस्कृतिक उत्सव 28 फरवरी व 1 मार्च 2025

दर्शक दीर्घा

हिन्दुस्तान | www.livehindustan.com

अपना बनारस वाराणसी, रविवार, 2 मार्च 2025 08

बनारस में देश की संस्कृति के दर्शन

वाराणसी, मुख्य संवाददाता। लोक संस्कृति के आईने से देखा जाए तो बनारस सामंजस्यता के कारण पूरे विश्व में आकर्षण का केंद्र रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने साहित्य में लोकमंगल को महत्व देते हैं। यहां की गली-मोहल्ले में हर प्रदेश की संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसका आधार लोकमंगल है। यह बातें वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मुक्ता ने कहीं।

वह शनिवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से नक्खीघाट स्थित चित्रकूट आश्रम में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रही थीं। अध्यक्षता ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो. मंजुला चतुर्वेदी, निदेशक दूरदर्शन एवं आकाशवाणी राजेश गौतम रहे। नवगीतकार सुरेन्द्र बाजपेयी, डॉ श्रद्धानंद, प्रो रचना शर्मा, डॉ. संगीत श्रीवास्तव, डॉ. शुभ्रा वर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र में नाटक, गायन, वादन, एकल एवं सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति की गई। संचालन प्रो. रचना शर्मा, स्वागत डॉ. संगीता श्रीवास्तव, संयोजन बीएल प्रजापति एवं धन्यवाद कृष्ण मुरारी ने दिया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से शनिवार को नक्खीघाट स्थित चित्रकूट आश्रम में सांस्कृतिक उत्सव में अतिथि एवं प्रतिभागी।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

बहुजन समय

प्रतापगढ़,रायबरेली,अयोध्या,उन्नाव,कानपुर,फतेहपुर,कन्नौज,हरदोई,लखनऊ,प्रयागराज से प्रकाशित... Bahujan samay (Lucknow) Email- bahujans07@gmail.com www.bahujansamay.com

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र संस्था वाराणसी में सांस्कृतिक उत्सव सम्पन्न

परिचर्चा नाटक गायन वादन तथा नृत्य एकल व सामूहिक का आयोजन

अजीत पाण्डेय

वाराणसीमे आज सांस्कृतिक उत्सव के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में परिचर्चा लोक संस्कृति के आईने में बनारस विषयक परिचर्चा में अध्यक्ष पद से काशी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ सुरेन्द्र प्रताप ने कहा कि विश्व स्तर पर बनारस का महत्व इसके विभिन्न स्वरूप पौराणिक धार्मिक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थित गंगा जी के किनारे इसकी अनूठी छटा इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित करती है। विशिष्ट अतिथि राजेश गौतम निदेशक दूरदर्शन व आकाशवाणी ने कहा बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं संगीत की परंपरा है इस लोक संगीत और लोक नाटक विशेष रामलीला का एक बहुत समृद्ध भंडार है। संगीत समारोह मेलों त्योहारों अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है काशी अपना वक्तव्य देते हुए डॉ श्रद्धानंद ने कहा कि बनारस साहित्य कला नृत्य और संगीत से बढ़कर आध्यात्मिकता और कलात्मक विरासत का प्रतीक है। स्कूलों अकादमियों और सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से पोषित यहां की कला अतीत और वर्तमान को जोड़ती है और वाराणसी की विरासत को संरक्षित करती है मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए डॉ मुक्ता ने कहा लोक संस्कृति के आईने से देखा जाय तो बनारस अपनी विपुलता

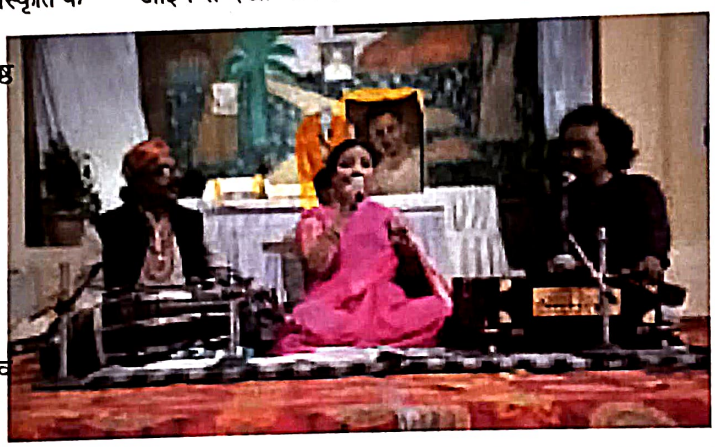

सघनता समरसता और गंगा जमुनी सामंजस्यता के कारण पूरे विश्व के आकर्षण का केंद्र रहा है। आचार्य शुक्ल अपने साहित्य में लोकमंगल को महत्व देते हैं। यहाँ की गली मोहल्ले में हर प्रदेश की संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसका आधार लोकमंगल है। बनारस की लोकगायकी ठुमरी टप्पा कजरी ने पूरे देश में शास्त्रीय गायन के समकक्ष जगह बनाई है साहित्य संगीत कला का उद्गम स्थल रहा है काशी। अनूठे लक्खी मेलों का शहर है बनारस। वरिष्ठ नवगीतकार सुरेन्द्र बाजपेयी ने कहा जब लोक मंगल की परम्पराएँ रीति रिवाज के साथ जारी रहती हैं तो लोक संस्कृति समृद्ध होती है। बनारस इस बात का साक्षात प्रमाण है। डॉ मञ्जरी पाण्डेय ने लोक संस्कृति के आइने में बनारस को देखनै के लिये बौद्ध धर्म को भी देखना समझना पड़ेगा। धरोहरों से लेकर बौद्ध रीति परंपराओं में उपयोग में आने वाले खास रेशमी परिधानों खाता पात्र आदि लखौरी ईंटों से लेकर बनारस के कला कौशल रेशम धातुएं और काष्ठकलाओं जिनका उपयोग आज भी पारंपरिक तरीके से हो रहा है जो आज भी अपसंस्कृति के प्रभाव से बचा है। अपने वक्तव्य में विशिष्ट अतिथि के रुप प्रो मंजुला चतुवेर्दी ने कहा कि लोक संस्कृति के आईने में जब हम बनारस को देखते हैं तो हम इसे बहुत समृद्ध पाते हैं चाहे वह कला की दृष्टि हो, चाहे संगीत की अथवा लोक साहित्य की लोक संस्कृति सर्वत्र अपने समृद्ध स्वरूप में विराजमान रही है जिसने जीवन को जीने के मूल मंत्र दिए हैं किंतु वर्तमान समय में अपसंस्कृति के प्रभाव से लोक जीवन के प्रभाव छिन्न-भिन्न हुए हैं जिनको पुनर्जीवित करना अथवा उनका संरक्षण करना हमारे जीवन की आवश्यकता है।

हिन्दी दैनिक
भीमवार्ता
BHEEM VARTA
राजधानी लखनऊ से प्रकाशित
R.N.I. No. : UPHIN/2021/82164
पृष्ठ-4 मूल्य-रु.
लखनऊ, रविवार, 02 मार्च 2025
वर्ष-04 अंक-121

SA NEWS
जन की आवाज
हर खबर आप तक

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र संस्था वाराणसी में सांस्कृतिक उत्सव के तहत परिचर्चा नाटक गायन वादन तथा नृत्य एकल व सामूहिक का आयोजन चित्रकूट आश्रम नाथीघाट सारंग चौराहा में संपन्न हुआ।

संवाददाता जमील अख्तर

1मार्च सांस्कृतिक उत्सव के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में परिचर्चा लोक संस्कृति के आईने में बनारस विषयक परिचर्चा में

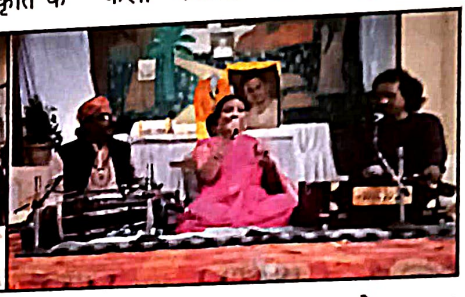

अध्यक्ष पद से काशी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ सुरेन्द्र प्रताप ने कहा कि विश्व स्तर पर बनारस का महत्व इसके विभिन्न स्वरूप पौराणिक धार्मिक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थित गंगा जी के किनारे इसकी अनूठी छटा इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

विशिष्ट अतिथि राजेश गौतम निदेशक दूरदर्शन व आकाशवाणी ने कहा बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं संगीत की परंपरा है इस लोक संगीत और लोक नाटक विशेष रामलीला का एक बहुत समृद्ध भंडार है। संगीत समारोह मेलों त्योहारों अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है काशी अपना वक्तव्य देते हुए डॉ श्रद्धानंद ने कहा कि बनारस साहित्य कला नृत्य और संगीत से बढ़कर आध्यात्मिकता और कलात्मक विरासत का प्रतीक है। स्कूलों अकादमियों और सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से पोषित यहां की कला अतीत और वर्तमान को जोड़ती है और वाराणसी की विरासत को संरक्षित करती है।

मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए डॉ मुक्ता ने कहा लोक संस्कृति के आईने से देखा जाय तो बनारस अपनी विपुलता सघनता समरसता और गंगा जमुनी सामंजस्यता के कारण पूरे विश्व के आकर्षण का केंद्र रहा है। आचार्य शुक्ल अपने साहित्य में लोकमंगल को महत्व देते हैं। यहाँ की गली मोहल्ले में हर प्रदेश की संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसका आधार लोकमंगल है। बनारस की लोकगायकी ठुमरी टप्पा कजरी ने पूरे देश में शास्त्रीय गायन के समकक्ष जगह बनाई है।साहित्य संगीत कला का उद्गम स्थल रहा है काशी। अनूठे लक्खी मेलों का शहर है बनारस। वरिष्ठ नवगीतकार सुरेन्द्र बाजपेयी ने कहा जब लोक मंगल की परम्पराएँ रीति रिवाज के साथ जारी रहती हैं तो लोक संस्कृति समृद्ध होती है। बनारस इस बात का साक्षात प्रमाण है। डॉ मञ्जरी पाण्डेय ने लोक संस्कृति के आइने में बनारस को देखनै के लिये बौद्ध धर्म को भी देखना समझना पड़ेगा। धरोहरों से लेकर बौद्ध रीति परंपराओं में उपयोग में आने वाले खास रेशमी परिधानों खाता पात्र आदि लखौरी ईंटों से लेकर बनारस के कला कौशल रेशम धातुएं और काष्ठकलाओं जिनका उपयोग आज भी पारंपरिक तरीके से हो रहा है जो आज भी अपसंस्कृति के प्रभाव से बचा है। अपने वक्तव्य में विशिष्ट अतिथि के रुप प्रो मंजुला चतुवेर्दी ने कहा कि लोक संस्कृति के आईने में जब हम बनारस को देखते हैं तो हम इसे बहुत समृद्ध पाते हैं चाहे वह कला की दृष्टि हो, चाहे संगीत की अथवा लोक साहित्य की लोक संस्कृति सर्वत्र अपने समृद्ध स्वरूप में विराजमान रही है जिसने जीवन को जीने के मूल मंत्र दिए हैं किंतु वर्तमान समय में अपसंस्कृति के प्रभाव से लोक जीवन के प्रभाव छिन्न-भिन्न हुए हैं जिनको पुनर्जीवित करना अथवा उनका संरक्षण करना हमारे जीवन की आवश्यकता है।

Organizing discussion, drama, singing, playing and dance solo and group under cultural festival

Varanasi: As part of the cultural festival at Mahapandit Rahul Sankrityayan Research and Study Centre, Varanasi, an event of discussion, drama, singing, playing and solo and group dance was organized at Chitrakoot Ashram Nathighat Sarang Chauraha. 01 March In the first session of the first day of the cultural festival, a discussion was held on the topic of Banaras in the mirror of folk culture. Speaking from the chair, senior litterateur of Kashi, Dr Surendra Pratap said that the importance of Banaras at the global level, its various forms, mythological, religious, geographical and historical, its unique charm situated on the banks of river Ganga, establishes it as the cultural capital of India.

Special guest Rajesh Gautam, Director, Doordarshan and All India Radio said that the Banaras Gharana has its own tradition of dance and music. It has a very rich repository of folk music and folk drama, especially Ramlila. Kashi is replete with a rich tradition of concerts, fairs, festivals, akhadas and sports. While giving his speech, Dr Shraddhanand said that Banaras is more than literature, art, dance and music, it is a symbol of spirituality and artistic heritage. Nurtured through schools, academies and cultural festivals, the art here connects the past and the present and preserves the heritage of Varanasi.

Addressing as the chief guest, Dr Mukta said that if

seen from the mirror of folk culture, Banaras has been the center of attraction for the whole world due to its abundance, density, harmony and Ganga-Jamuni harmony. Acharya Shukla gives importance to Lokmangal in his literature. The culture of every state is visible in the streets and neighborhoods here, the basis of which is Lokmangal. Banaras' folk singing Thumri Tappa Kajri has made a place in the whole country at par with classical singing. Kashi has been the origin place of literature, music and art. Banaras is the city of unique Lakhhi fairs. Senior Navgeetkar Surendra Bajpai said that when the traditions of Lokmangal continue with customs, then folk culture becomes rich. Banaras is a living proof of this. Dr Manjari Pandey said that to see Banaras in the mirror of folk culture, one will have to see and understand Buddhism as well. From heritage to special silk clothes used in Buddhist customs, khata patra etc., from lakhori bricks to the art skills of Banaras, silk metals and woodcrafts, which are still being used in the traditional way, which is still safe from the influence of bad culture. In her speech, Prof Manjula Chaturvedi, as a special guest, said that when we look at Banaras in the mirror of folk culture, we find it very rich, whether it is the perspective of art, music or folk literature, folk culture has been present everywhere in its rich form, which has given the basic mantras of living life, but in the present time, the effects of folk life have been shattered due to the influence of bad culture, which is the need of our life to revive or preserve them.

ज्ञानशिखा टाइम्स

gyanshikhatimes@gmail.com | R.N.I. No. UPHIN/2013/50496 | राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

वाराणसी । रविवार । 2 मार्च, 2025 मूल्य : दो रुपया

लोक संस्कृति के आईने में चमकता बनारस-प्रो.श्रद्धानंद

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, संस्था वाराणसी में सांस्कृतिक उत्सव के तहत परिचर्चा, नाटक, गायन, वादन तथा नृत्य एकल व सामूहिक का आयोजन 28 फरवरी तथा 1मार्च को 2025 को चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा में संपन्न हुआ।सांस्कृतिक उत्सव के प्रथम दिन के प्रथम सत्र में परिचर्चा "लोक संस्कृति के आईने में बनारस" विषयक परिचर्चा में अध्यक्ष पद से काशी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ सुरेन्द्र प्रताप ने कहा कि विश्व स्तर पर बनारस का महत्व इसके विभिन्न स्वरूप पौराणिक धार्मिक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थित गंगा जी के किनारे इसकी अनूठी छटा इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

विशिष्ट अतिथि श्री राजेश गौतम निदेशक, दूरदर्शन व आकाशवाणी ने कहा बनारस घराने की अपनी खुद की नृत्य एवं संगीत की परंपरा है इस लोक संगीत और लोक नाटक विशेष रामलीला का एक बहुत समृद्ध भंडार है। संगीत समारोह मेलों , त्योहारों अखाड़ों एवं खेल की समृद्ध परंपरा से परिपूर्ण है काशी अपना वक्तव्य देते हुए डॉ श्रद्धानंद ने कहा कि बनारस साहित्य , कला , नृत्य और संगीत से बढ़कर के कारण पूरे विश्व के आकर्षण का केंद्र रहा है।आचार्य शुक्लअपने साहित्य में लोकमंगल को महत्व देते हैं। यहाँ की गली मोहल्ले में हर प्रदेश इस बात का साक्षात् प्रमाण है। डॉ मञ्जरी पाण्डेय ने लोक-संस्कृति के आइने में बनारस को देखने के लिये बौद्ध धर्म को भी देखना,

आध्यात्मिकता और कलात्मक विरासत का प्रतीक है। स्कूलों, अकादमियों और सांस्कृतिक उत्सव के माध्यम से पोषित यहां की कला , अतीत और वर्तमान को जोड़ती है और वाराणसी की विरासत को संरक्षित करती है। मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए डॉ मुक्ता ने कहा लोक संस्कृति के आईने से देखा जाय तो बनारस अपनी विपुलता, सघनता, समरसता और गंगा जमुनी सामंजस्यता की संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसका आधार लोकमंगल है। बनारस की लोकगायकी ,ठुमरी, टप्पा, कजरी ने पूरे देश में शास्त्रीय गायन के समकक्ष जगह बनाई है।साहित्य, संगीत, कला का उद्गम स्थल रहा है काशी। अनूठे लक्खी मेलों का शहर है बनारस। वरिष्ठ नवगीतकार सुरेन्द्र बाजपेयी ने कहा जब लोक मंगल की परम्पराएँ रीति रिवाज के साथ जारी रहती हैं तो लोक-संस्कृति समृद्ध होती है। बनारस समझना,पड़ेगा। धरोहरों से लेकर बौद्ध रीति परंपराओं में उपयोग में आने वाले खास रेशमी परिधानों, खाता ,पात्र आदि लखौरी ईंटों से लेकर बनारस के कला कौशल,रेशम,धातुएं और काष्ठकलाओं जिनका उपयोग आज भी पारंपरिक तरीके से हो रहा है जो आज भी अपसंस्कृति के प्रभाव से बचा है।अपने वक्तव्य में विशिष्ट अतिथि के रूप प्रो मंजुला चतुर्वेदी ने कहा कि लोक संस्कृति के आईने में जब हम बनारस को देखते हैं तो हम इसे बहुत समृद्ध पाते हैं चाहे वह कला की दृष्टि हो, चाहे संगीत की अथवा लोक साहित्य की लोक संस्कृति सर्वत्र अपने समृद्ध स्वरूप में विराजमान रही है जिसने जीवन को जीने के मूल मंत्र दिए हैं किंतु वर्तमान समय में अपसंस्कृति के प्रभाव से लोक जीवन के प्रभाव छिन्न-भिन्न हुए हैं जिनको पुनर्जीवित करना अथवा उनका संरक्षण करना हमारे जीवन की आवश्यकता है। अपने वक्तव्य में प्रो रचना शर्मा ने कहा प्रो. रचना शर्मा ने कहा कि आदि देव शिव की नगरी काशी एक विलक्षण नगरी है व शिव लोक के देवता हैं इसलिए काशी भी लोक संस्कृति में रंगा हुआ सात वार नौ त्योहार का शहर है। जहाँ शिव के द्वारा पार्वती का गौना करा कर लाने का भी लोकोत्सव मनाया जाता है ।इस अवसर पर काशी के वरिष्ठ साहित्यकार और रंगकर्मी उपस्थित रहे। लोक साहित्यिक गोष्ठी में क्षेत्र की महिलाओं ने भी लोकगीत व लोक नृत्य का झूम झूम कर आनंद लिया ।द्वितीय सत्र के सांस्कृतिक उत्सव में गायन , नृत्य व वादन में योगेश कुमार तबला वादक, प्रशांत सहनी गायक, लोक गायिका सरोज वर्मा, हारमोनियम सर्वेश शर्मा, सुभाष कनौजिया नाल वादन, अनूप मिश्रा गायन, लोक-नृत्य समृद्धि श्रीवास्तव, नगर निगम के ब्रांड एंबेसडर अमित श्रीवास्तव ने जटायु की सद्गति नामक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति की द्वितीय दिवस 1 मार्च 2025 को मुख्य अतिथि प्रो मंजुला चतुर्वेदी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ श्रद्धानंद रहे। स्मृति चिन्ह और अंग वस्त्र से उनका स्वागत सचिव ने किया। सांस्कृतिक उत्सव के अंतर्गत नाट्य मंचन तथा समूह नृत्य प्रस्तुत किया गया। विलने प्रेमचंद के नाटक बेटों वाला धन की नाट्य प्रस्तुति हुई। कलाकारों में डिम्पल कुमार पाल आदर्श कुमार तिवारी प्रवीण, अजीत यादव, भानु प्रताप,आनंद कुमार कुंदन, अमरजीत, रंजना, नितिन सोनी नैन्सी टकसाली खुशबू, दिनेश उपाध्याय आदि शामिल रहे। नाट्य रूपांतरण प्रो अरुण जैन तथा निर्देशक डॉ शुभा वर्मा ने किया शुभा वर्मा के निर्देशन में ही रेलिया बैरन और होली नृत्य की प्रस्तुति हुई। सभी 22-25 कलाकारों को अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और सर्टिफिकेट मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो रचना शर्मा, स्वागत संस्था सचिव डॉ संगीता श्रीवास्तव तथा संयोजन श्री बी एल प्रजापति व कृष्ण मुरारी ने किया।

कलाकारों के नाम

रजि.सं. 1396 स्थापना वर्ष : 2002-03

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

प्रायोजक: उत्तर प्रदेश क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज
सहयोग : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी तथा 1 मार्च 2025 अपरान्ह 2 बजे
स्थान : चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा, (चित्रकूट कान्वेन्ट स्कूल के पास) वाराणसी

प्रथम सत्र
सांस्कृतिक परिचर्चा (प्रथम दिवस)

मुख्य अतिथि : सुश्री वंदिता श्रीवास्तव (उप जिलाधिकारी, वाराणसी)

1. डॉ. मुक्ता (अध्यक्ष)
2. श्री राजेश गौतम (विशिष्ट अतिथि)
3. डॉ. सुरेन्द्र प्रताप (विशिष्ट अतिथि)
4. प्रो. रचना शर्मा (विषय प्रवर्तन एवं संचालन)

वरिष्ठ साहित्यकार एवं अभिनयकर्ता

1. डॉ. श्रद्धानंद
2. डॉ. राम सुधार सिंह
3. प्रो. मंजुला चतुर्वेदी
4. डॉ. सुचिता शर्मा
5. श्री सुरेन्द्र वाजपेयी
6. डॉ. मंजरी पाण्डेय
7. डॉ. सुमन पाठक
8. डॉ. शुभ्रा वर्मा
9. डॉ. गीता रानी शर्मा
10. डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तव
11. श्रीमती संगीता तिवारी
12. डॉ. शरद श्रीवास्तव
13. श्रीमती संचिता पाण्डेय
14. श्री अरुण कुमार सिंह
15. श्री किर्ती प्रकाश पाण्डेय
16. डॉ. आनन्द श्रीवास्तव 'मासूम'
17. डॉ. संतोष कुमार 'प्रीत'
18. श्री राजीव गौड़

द्वितीय सत्र
सांस्कृतिक गायन, नृत्य व वादन

1. योगेश कुमार मिश्रा व तबले पर संगत प्रशांत साहनी
2. सरोज वर्मा, लोक गायिका (मिर्जापुर)

हारमोनियम संगत – नागेन्द्र शर्मा, ढोलक–सुभाष कनौजिया
साइड इफेक्ट्स – मुकेश कुमार

3. अनूप मिश्रा, गायन लोकगीत
4. सुभाष कनौजिया, ताल वादन
5. समृद्धि श्रीवास्तव–नृत्य वंदना
6. कलाकार – अमित श्रीवास्तव ब्राड अम्बेसडर नगर निगम, वाराणसी

नृत्य नाटिका की प्रस्तुति (प्रसंग जटायु की सद्गति)

बी.एल.प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक

डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सचिव

आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

कलाकारों के नाम

रजि.सं. 1396 स्थापना वर्ष : 2002-03

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

प्रायोजक: उत्तर प्रदेश क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज
सहयोग : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी तथा 1 मार्च 2025 अपरान्ह 2 बजे
स्थान : चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा, (चित्रकूट कान्वेन्ट स्कूल के पास) वाराणसी

सांस्कृतिक उत्सव–नाट्य मंचन तथा समूह नृत्य

(द्वितीय दिवस)

नाटक–बेटी का धन — लेखक–मुंशी प्रेमचन्द
नाट्य रूपान्तरण–प्रो. अरुण जैन — निर्देशक व परिकल्पना–डॉ शुभ्रा वर्मा

कलाकार :–

1. सुक्खू चौधरी– अजीत कुमार
2. गवाजली – रंजन सोनकर
3. भाभी 1 – वैष्णवी सेठ
4. ग्रामीण महिला 1 – शालिनी कुमारी
5. ग्रामीण महिला 2 – अनन्या त्रिपाठी
6. ग्रामीण महिला 3 – डिम्पल जायसवाल
7. ग्रामीण महिला 4 – रीनी मिश्रा
8. फक्कड़ – कुंदन कुमार
9. झींगुर लठैत – आनन्द कुमार
10. जीतन सिंह – भानु प्रताप
11. पंडित जी – लियाकत अली
12. ग्रामीण 1 – निरंजन प्रजापति
13. झगड़ू साह– अमरजीत सिंह
14. पोस्टमैन – कान्हा मिश्रा

संगीत संचालन : कान्हा मिश्रा
मंच सज्जा : भानु प्रताप, आनन्द कुमार, अजीत कुमार
रूप सज्जा : अलका अस्थाना
वस्त्र सज्जा : डॉ. शुभ्रा वर्मा

होली नृत्य

1. रंजना सोनकर
2. शालिनी कुमारी
3. प्रियम
4. वैष्णसी सेठ
5. नैन्सी टकसाली
6. स्तुति चौधरी
7. रितेश उपाध्याय
8. अमरजीत सिंह
9. कुन्दन कुमार

नृत्य "रैलिया बैरन"

1. रंजना सोनकर
2. शालिनी कुमारी
3. प्रियम
4. वैष्णसी सेठ
5. नैन्सी टकसाली
6. पलक टकसाली
7. स्तुति चौधरी

बी.एल.प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक

डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सचिव

आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध
एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध
एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

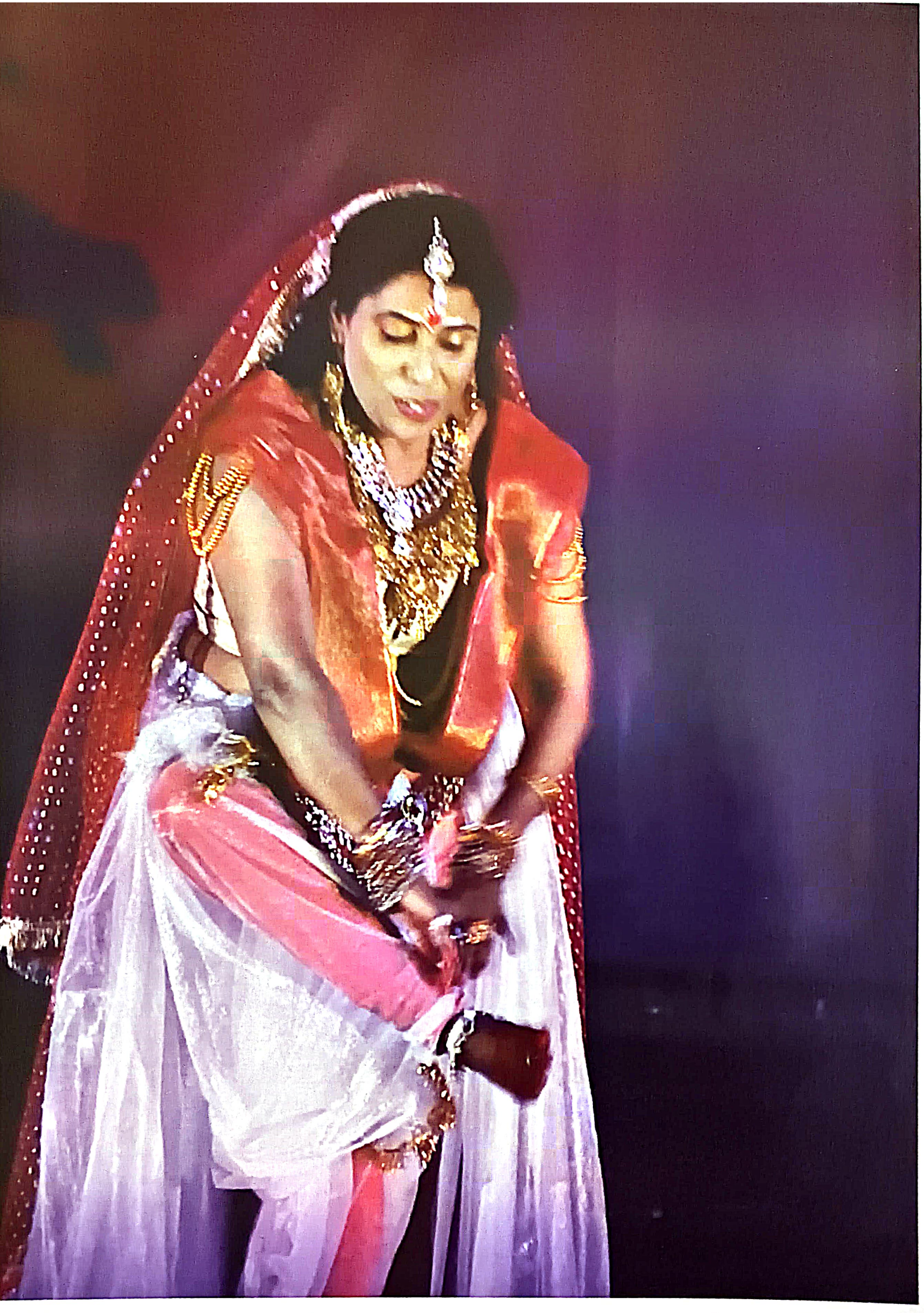

रजि.सं. 1396
स्थापना वर्ष : 2002-03
"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
सत्यमेव जयते
प्रायोजक: उत्तर प्रदेश क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज
सहयोग : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी तथा 1 मार्च 2025 अपरान्ह 2 बजे
स्थान : चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा, (चित्रकूट कान्वेन्ट स्कूल के पास) वाराणसी
बी.एल.प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सचिव
आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

रजि.सं. 1396
स्थापना वर्ष : 2002-03
"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
सत्यमेव जयते
प्रायोजक: उत्तर प्रदेश क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज
सहयोग : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी तथा 1 मार्च 2025 अपरान्ह 2 बजे
स्थान : चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा, (चित्रकूट कान्वेन्ट स्कूल के पास) वाराणसी
बी.एल.प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सचिव
आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

रजि.सं. 1396
स्थापना वर्ष : 2002-03
"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
सत्यमेव जयते
प्रायोजक: उत्तर प्रदेश क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज
सहयोग : संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी तथा 1 मार्च 2025 अपरान्ह 2 बजे
स्थान : चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा, (चित्रकूट कान्वेन्ट स्कूल के पास) वाराणसी
बी.एल.प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सचिव
आयोजक-महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था, वाराणसी

रजि सं0 1396
स्थापना वर्ष 2002.03
"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"
प्रायोजक :- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज
सहयोग :- संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आयोजक :- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था- वाराणसी
28 फरवरी तथा 01 मार्च 2025
नाम
मोबाइल नं.

रजि सं0 1396

स्थापना वर्ष 2002.03

निमंत्रण पत्र

"लोक संस्कृति के आईने में बनारस"

प्रायोजक :- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज

सहयोग :- संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली

आयोजक :- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था- वाराणसी

28 फरवरी तथा 01 मार्च 2025

हमारी संस्था वाराणसी में सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन 28 फरवरी तथा 1 मार्च को चित्रकूट आश्रम, नक्खीघाट, सारंग चौराहा (चित्रकूट कान्वेंट स्कूल के पास) में आयोजित किया जा रहा है।

प्रथम दिवस 28 फरवरी 2025

मुख्य अतिथि : सुश्री वंदिता श्रीवास्तव,एडीएम सीटी, वाराणसी
कार्यक्रम अध्यक्ष : डा0 मुक्ता, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध कथाकार
विशिष्ट अतिथि : श्री राजेश गौतम, निदेशक दूरदर्शन और आकाशवाणी, वाराणसी।

द्वितीय दिवस 1 मार्च 2025

मुख्य अतिथि : श्री राम नरेश पाल सिंह, क्षे. पु. वि. एवं प्रभारी क्षे. सां. अधिकारी
विशिष्ट अतिथि : प्रो मंजुला चतुर्वेदी, पूर्व विभागाध्यक्ष ललित कला विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

इस सांस्कृतिक उत्सव में आपकी उपस्थिति हमें गौरवान्वित करेगी ।

चिर प्रतीक्षित संस्था परिवार।

सादर आभार

वी. एल. प्रजापति
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक

डॉ. संगीता श्रीवास्तव
सचिव

Email : r.sankrityayan2002@gmail.com

Website : www.mahapanditsseak.org

रजि सं0 1396

स्थापना वर्ष 2002.03

सांस्कृतिक उत्सव

''लोक संस्कृति के आईने में बनारस''

प्रायोजक :- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज

सहयोग :- संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

28 फरवरी तथा 01 मार्च 2025

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री ..... ने ''सांस्कृतिक उत्सव'' की विधा लोक परिचर्चा /लोक नाटक /लोक नृत्य /लोक गायन /लोक वादन में स्थान- चित्रकूट आश्रम, नक्खी घाट, सारंग तालाब, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में प्रतिभागिता की।

बी. एल. प्रजापति	प्रो. सुरेन्द्र प्रताप	डॉ. मुक्ता	प्रो. मंजुला चतुर्वेदी	डॉ. संगीता श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक	संरक्षक	संरक्षक	संरक्षक	सचिव

आयोजक :- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था- वाराणसी

Email : r.sankrityayan2002@gmail.com

Website : www.mahapanditsseak.org